## अभिव्यक्ति

'काशीमरणान्मुक्ति' एक कथा मात्र नहीं, यह तो उस शाश्वत चिरन्तन ब्रह्म तत्त्व सम्वलित अमत्त एवं दिव्य ज्ञानामृत की अनुपम धारा है, जिसे पान कर सहृदय पाठक स्वयं के अन्तःकरण में विद्यमान परम सत्य रूपी ब्रह्म का साक्षात्कार कर परंब्रह्म एवं परमात्मा रूपी अनन्त सागर में अवगाहन करता हुआ सत्य, शिव और सुन्दर परम शिव का अलौकिक और सहजागम्य स्वरूप में लीन हो जाता है; व्यक्ति स्वयं की सीमीतता, असमर्थता, असंप्रभुता, अज्ञानता, लौकिकता, क्षणभंगुरता, स्वार्थता, व्यक्तिकेन्द्रिकता, पार्थिवता आदि समस्त नाशशील धर्मो को त्याग कर अन्तर्निहित चैतन्य की नित्यता, असीमितता, अनन्त सामर्थ्य, अलौकिक ज्ञानस्वरूपत्व, सार्वभौमिकत्व, सार्वकालिकत्व और सर्वशक्तिमत्त्व स्वरूप से परिचित हो कर शिवतत्त्व रूपी ज्योतिष्पुञ्ज में सायुज्य प्राप्त करता है। पाठक इस में प्रतिबिम्बित उपनिषद् एवं ब्रह्मसूत्र का महावाक्य 'अहं ब्रह्मास्मि' के तत्त्वार्थ का अनुभव करके स्वयं की व्यक्तावस्थाओं से अव्यक्तावस्था की ओर प्रयाण करता हुआ वैखरी, मध्यमा एवं पश्यन्ती रूप विवर्तो को त्याग कर परम शिव की परमशक्ति परा वाणी में लीन हो जाता है।

उपन्यास 'काशीमरणान्मुक्ति' का आद्य स्रोतः काशी की मणिकर्णिका घाट के महाश्मशान रूपी पृष्ठभूमि में पनपता हुआ संसारकी नश्वरता एवं परम शिव ज्योतिर्मय परंब्रह्म की शाश्वत, अमर, अजर, अप्रमेय एवं प्रकाशमय ज्ञान के दिव्य उत्स का परिचय देता है। पाठक धरातल की कालरात्रि के महान्धकार में ही प्रकाश पुञ्ज का आविष्कार करता है और विनाश के महाश्मसान में ही शुद्ध चैतन्य की खोज करता है। उसे ब्रह्मसूत्र की दिव्य वाणी 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' की सार्थकता से परिचय होता है।

काशी की श्मशानभूमि की इस नीरवता में शब्दब्रह्म अपने अस्तित्व का आभास देता है जो शिव के सेवक के ही चिदाकाश में श्रुति गोचर होता है। शिशु महा की प्राप्ति से यशोदा के लिए मृत्यु के महान्धकार से अमर आत्मा के प्रकाशपुञ्ज के साक्षात्कार से कम नहीं है। "शिव से काशी और काशी से शिव" रूपी दिव्योक्ति 'काशीमरणान्मुक्ति' से ही प्राप्त होती हुई पाठक को यह प्रति क्षण स्मरण कराती है –

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं ममदेव देव।।

वही परम शिव ही गुरु है, जो ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर रूपों को धारण करते है। वही माता, पिता, बन्धु, सखा, विद्या, धन आदि अनेक रूपों से साधक के जीवन यात्रा में सहायक होते हैं। चिरन्तन सत्य की यह शाश्वत

अभिव्यक्ति हमें 'काशीमरणान्मुक्ति' से प्राप्त होती कल्याणमय शिव तत्त्व को सभी में प्रकाशित कराती है, चाहे वह राघव हो, यशोदा हो या इस्माईल चाचा हो। काशी की इस पवित्र भूमि में न कोई भेद भाव है और न ही कोई राग द्वेष। सभी यहाँ शिवस्वरूप हैं। यहाँ की मिट्टी में संकीर्णता का दुर्गन्ध नहीं है। यहाँ के गङ्गा जल से स्वार्थता का प्रदूषण दूर है। आत्मा की अमरगाथा की शाश्वत कहानी है 'काशीमरणान्मुक्ति'। जीवात्मा एवं परमात्मा की मिलनरूपी प्रेम कहानी है 'काशीमरणान्मुक्ति'।

'काशीमरणान्मुक्ति' महा की उस महाप्रायाण की गाथा है, जिस में जीव का परंब्रह्म में लीन होने का दर्शन छिपा है। जीव की यह यात्रा अन्नमय कोश से प्राणमय कोश तत्पश्चात् मनोमय कोश और उसके बाद विज्ञानमय कोश और अन्त में आनन्दमय कोश में विद्यमान आत्मज्योति: से प्राप्ति तक है जहाँ उसे सोऽहमस्मि का बोध होता है, तब वह अपने अन्त:करण में सकल ब्रह्माण्ड के अस्तित्व का अनुभव करता है। जीव अपने स्थूल शरीर से सूक्ष्म शरीर होते हुए स्थूल प्रपञ्च से महाप्रपञ्च की इस यात्रा में जब परम शिव का साक्षात्कार होता है तब हृदय की समस्त ग्रन्थियाँ छिन्न हो जाती हैं, सारे संशय नष्ट हो जाते हैं, सभी पाप पुण्य रूप कर्म नष्ट होकर वह ब्रह्म निष्ठ हो जाता है। जैसे कि कहा गया है-

भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशया:।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे।।

इस उपन्यास का नायक महा परम शिव से एकाकार हो कर वह इस प्रकार अनुभव करता है जैसे कि जगद्-गुरु आदिशंकर की अनुभूति की अभिव्यक्ति है -

मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तानि नाहं न च श्रोत्रजिह्वे न च घ्राणनेत्रे।
न च व्योमभूमिर्न तेजो न वायु: चिदानन्दरूप: शिवोऽहं शिवोऽहम्।।
न च प्राणसंज्ञो न च पञ्चवायुर्न वा सप्तधातुर्न वा पञ्चकोश:।
न वाक् पाणिपादौ न चोपस्थपायू चिदानन्दरूप: शिवोऽहं शिवोऽहम्।।

'काशीमरणान्मुक्ति' सारे दर्शन का सार है, इसी में सांख्य भी है और योग भी है, इसी में ही द्वैत भी है और अद्वैत भी है। पुराणों का दर्पण है यह। इसी में कर्मयोग, भक्तियोग और ज्ञानयोग तीनों का समन्वय है। अन्त काल में परम शिव के स्मरण से इस उपन्यास का महा नायक महा परमेश्वर में लीन हो जाता है जो श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित है –

अन्तकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम्।
य: प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशय:।।(गीता, ८.५)

श्री मनोज टक्कर और सुश्री रश्मि छाजेड़ की यह अनुपम कृति उन सभी विशेषताओं से भरपुर है जो पाठक को लौकिक धरातल से आध्यात्मिक लोक में प्राप्त करा देती है। आधुनिक काल में रचित इस तरह की

कृतिओं में निश्चित रूप में यह श्रेष्ठ है। इस में भाषा, भाव एवं शैली तिनों ही सन्तुलित एवं व्यवस्थित हैं जो शान्त रस के परिपाक में सहायक सिद्ध प्रतीत होते हैं। अन्य आधुनिक उपन्यास की भाँति न ही इस में अदम्य वासनाओं का परिप्रकाश है और न ही कोई अनपेक्षित उत्तेजना है। यही परम सत्य का पथ प्रदर्शक है। यही सत्य शिव और सुन्दर का आदर्श स्वरूप है।

डॉ. सुज्ञान कुमार माहान्ति
सहायक आचार्य, संस्कृत साहित्य
राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थान,
वेदव्यासपरिसर, बत्ताहार, हि. प्र.
पि.नं. 177-101
Email- sugyan2003@yahoo.co.in